RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 21 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 5 अगस्त, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 21, 2-5 अगस्त 2018 तदनुसार 21 श्रावण, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

ब्राह्मण अवध्य है

लेo–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

तद्वै राष्ट्रमा स्त्रवति नावं भिन्नामिवोदकम्।
ब्रह्माणं यत्र हिंसन्ति तद्राष्ट्रं हन्ति दुच्छुना।।

–अथर्व० ५।१९।८

शब्दार्थ–इव = जैसे **उदकम्** = जल **भिन्नाम्** = टूटी हुई **नावम्** = नौका को डुबा देता है, वैसे **वै** = सचमुच **तत्** = वह **राष्ट्रम्** = राष्ट्र **आ+स्त्रवति** = बह जाता है, नष्ट हो जाता है **यत्र** = जिस राष्ट्र में **ब्रह्माणम्** = ब्रह्मवेत्ता को **हिंसन्ति** = मारते हैं, **तत्** = वह ब्रह्महत्याकर्म **दुच्छुना** = दुर्गति से **राष्ट्रम्** = राष्ट्र को **हन्ति** = मार देता है।

व्याख्या–इस मन्त्र में ब्राह्मण की हत्या का कुफल वर्णन किया गया है। बतलाया है कि जैसे नौका में छिद्र हो जाए, उसमें जल आने लगे और निकालने का कोई उपाय न किया जाए तो नौका डूब जाती है, ऐसे ही जिस राष्ट्र में ब्राह्मण की हिंसा होती है, वह देश भी नष्ट हो जाता है, डूब जाता है, क्योंकि वह ब्रह्महत्या लौटकर राष्ट्र को मार देती है। सचमुच यह अद्‌भुत बात है।

ब्राह्मण की हत्या का निषेध वेद में अन्यत्र भी है। यथा–

(१) यो ब्राह्मणं मन्यते अन्नमेव स विषस्य पिबति तैमातस्य।
–अ० ५।१८।४

वह घोला हुआ विष पीता है, जो ब्राह्मण को अन्न ही मानता है।

(२) न ब्राह्मणो हिंसितव्योऽग्निः प्रियतनोरिव। –अ० ५।१८।६

प्रिय शरीर की आग के समान ब्राह्मण की हत्या नहीं करनी चाहिए।

(३) यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम्।
–अ० ५।१८।१३

जो देवबन्धु ब्राह्मण को मारता है, वह पितृयाण = खानदान चलाने की अवस्था को भी नहीं प्राप्त करता।

इन निर्देशों से स्पष्ट सिद्ध है कि ब्राह्मण की हत्या नहीं करनी चाहिए, किन्तु ब्राह्मण है कौन ? साधारणतः लोगों की धारणा है कि कुल विशेष में उत्पन्न व्यक्ति ब्राह्मण है। इस धारणा के निर्मूल होने का प्रमाण लोकव्यवहार है, अनेक ब्राह्मण-नामधारी मनुष्यों की हत्या चोर-डाकुओं द्वारा, अथवा राजा की आज्ञा से होती है, किन्तु उस राष्ट्र का कुछ भी नहीं बिगड़ता। इससे प्रतीत होता है कि वेद में ब्राह्मण शब्द का अभिप्राय कुछ और ही है। अथर्ववेद [५।१८।१३] में 'ब्राह्मण' का विशेषण 'देवबन्धु' आया है। इससे प्रतीत होता है कि ब्राह्मण देवबन्धु होना चाहिए। किसी कुल विशेष में उत्पन्न होने से देवबन्धु नहीं बनता, वरन् जो देव का बन्धु बनेगा, वह देवबन्धु होगा। प्रतिदिन भगवान् से प्रार्थना करते हुए हम कहते हैं–**'स नो बन्धुर्जनिता'** [यजुः० ३२।१०] = वह परमेश्वर हमारा बन्धु तथा उत्पादक है। जो मनुष्य सचमुच परमेश्वर का बन्धु बन जाता है, उससे सम्बन्ध स्थापित कर लेता है, वह सच्चा देवबन्धु है। इसी प्रकार ब्राह्मण शब्द का अर्थ है–जो ब्रह्म का हो। दोनों का अर्थ एक है, अर्थात् ब्राह्मण देवभक्त का नाम है। ब्रह्मभक्त वही हो सकता है, जो परमेश्वर की भाँति संसार के उपकार में तत्पर रहता हो। लोकोपकारी देवबन्धु की हत्या तो सचमुच राष्ट्र में विप्लव उत्पन्न कर देती है। उसकी हत्या से राष्ट्र की नौका डूबने में कोई सन्देह नहीं रहता।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियं जिन्वमवसे हूमहे वयम्।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये।।

–ऋ० १.८९.५

भावार्थ–सब चर और अचर के स्वामी परमेश्वर की, हम प्रार्थना उपासना करते हैं, कि वह हमारी बुद्धियों को शुभमार्ग में लगावे, और हमारे तन, धन की रक्षा करे, हमारा कल्याण का रक्षक तथा पालक हो, क्योंकि उस प्रभु की कृपा–दृष्टि के बिना न हमारा तन और धन सुरक्षित हो सकता है, और न ही हमें कल्याण प्राप्त हो सकता है। इसलिए इस लोक और परलोक में कल्याण प्राप्ति के लिए, उस जगत् पति परमात्मा की हम लोग प्रार्थना उपासना करते हैं।

विश्वे देवा नो अद्या स्वस्तये वैश्वानरो वसुरग्निः स्वस्तये।
देवा अवन्त्वृभवः स्वस्तये स्वस्ति नो रुद्रः पात्वंहस।।

–ऋ० ५.५१.१३

भावार्थ–हे सब मनुष्यों के हितकर्ता ज्ञानस्वरूप सर्वव्यापक प्रभो! जितने दिव्यशक्ति वाले पदार्थ हैं, वे सब आपकी कृपा से हमें अब सुखदायक हों। सब ज्ञानी लोग हमारे कल्याणकारक हों। जिन ज्ञानी और आपके भक्त महात्माओं के सत्सङ्ग से, हमारा जन्म सफल हो सके और जिनकी प्राप्ति, आपकी कृपादृष्टि के बिना नहीं हो सकती, ऐसे महानुभाव हमारा कल्याण करें भगवान्! पापी लोगों को उनके सुधार के लिए उनके पापों का फल आप दण्ड देते हैं। हम पर कृपा करके उन पापों से हमें बचाएँ और हमारा कल्याण करें।

श्रद्धां देवा यजमाना वायुगोपा उपासते।
श्रद्धां हृदय्ययाकूत्या विन्दते वसु।।

–ऋ० १०.१५१.४

भावार्थ–श्रेष्ठ कर्म करने वाले जिनकी सदा प्रभु रक्षा करता है, ऐसे विद्वान् पुरुष वेदों में और वेदोक्त धर्म में तथा वेदज्ञ महात्माओं के वचनों में दृढ़ विश्वास करते हैं। पुरुष अपने पवित्र हृदय के भाव से श्रद्धा को और श्रद्धा से धन को प्राप्त होता है। श्रद्धा के बिना कोई भी श्रेष्ठ कर्म नहीं हो सकता। जिनकी वेदों में और अपने माननीय आचार्यों में श्रद्धा नहीं, ऐसे नास्तिक कोई अच्छा धर्म कर्म नहीं कर सकते। श्रेष्ठ धर्म–कर्म और ब्रह्मज्ञान के बिना यह दुर्लभ मनुष्य देह व्यर्थ हो जाता है। इसलिए ऐसे नास्तिक भाव को अपने मन में कभी नहीं आने देना चाहिये।

संस्कृत-संस्कृति-संस्कार

ले.-डॉ. निर्मल कौशिक कर्मशीला संस्कृत विकास मंच 163, आदर्श नगर, फरीदकोट

संस्कृत भाषा एक सम्पन्न भाषा है और भारतीय संस्कृति एक समृद्ध संस्कृति। संस्कृत भाषा में अक्षुण्ण भारतीय साहित्य रचा गया है। वैदिक काल से वेद, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ भारतीय संस्कृति को प्रतिबिम्बित करते रहे हैं। अनेक ऋषियों, मुनियों साधकों ने इन ग्रन्थों के भाष्य भी रचे। इस समृद्ध संस्कृत साहित्य को विश्वभर में सम्मान मिला। विदेशों में इन ग्रन्थों पर शोधकार्य आज भी चल रहे हैं। वेद शब्द संस्कृत के विद् धातु से बना है जिसका अर्थ है जानना। अत: वेद ज्ञान के भण्डार है। कहा भी है वेदा: सर्व विद्यानाम् निधानं खलु।

विद्या शब्द की उत्पति भी विद् धातु से हुई है जो जानने अथवा ज्ञान प्राप्त करने का अर्थ देती है। संस्कृत भाषा में रचे होने के कारण वेदों का महत्त्व अत्यन्त बढ़ गया है। विद्या प्राप्ति का मूल साधन वेद को ही माना गया था। विद्या को मोक्ष प्राप्ति का माध्यम भी माना गया है। एक उक्ति के अनुसार सा विद्या या विमुक्तये विद्या मुक्ति का साधन इसलिए कहा गया है क्योंकि विद्या-शुभ और अशुभ का ज्ञान देती है। मनुष्य दुष्कर्मों से दूर रहकर सत्कर्म की ओर प्रेरित होता है और पुण्य कर्म करता है इससे मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है।

अनेक सिद्ध पुरुषों ने इस सन्देश को जन-जन तक पहुंचाने हेतु अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा के उत्थान एवं विकास हेतु उन्होंने इसके महत्त्व को जन-जन तक पहुंचाया। संस्कृत भाषा के महत्त्व को बताते हुए एक कवि ने कहा है।

संस्कृते संस्कृतिर्ज्ञेया, संस्कृते सकलाकला

संस्कृते सकलं ज्ञानं, संस्कृत किं न विद्यते

न तादृशे व्याकरणम्, यादृश संस्कृत भाषायाम्

न चापि तादृशी लिपिः, यादृशी संस्कृत भाषायाम्

संस्कृते पद्लालिप्त्यम्, संस्कृते चार्य गौरवम्

संस्कृते सकलं ज्ञानं, संस्कृत किं न विद्यते।।

संस्कृत भाषा का महत्त्व इसलिए भी है कि इस भाषा में रचित ग्रन्थ आध्यात्मिकता को मुखरित करते है। आत्मा, परमात्मा, माया, जीवन, मृत्यु, मोक्ष आदि के सम्बन्धों पर उत्पत्ति, प्रलय आदि पर भी प्रकाश डालते हैं। भारतीय संस्कृति में समाज संरचना में जीवन मूल्यों और अध्यात्मिक तत्त्वों का विशेष स्थान है। कर्म, उपासना और ज्ञान के आधार को मानकर जीवनयापन करने पर दिशा निर्देश दिए गए हैं। भारत में आज भी भारतीय संस्कृति को गौरवान्वित करने वाले अनेकों साधकों ने अपना पूरा जीवन लगा दिया। स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने इन जीवन मूल्यों को वेद, सत्य, विद्या, यज्ञ, संध्या, आदि पर बल दिया और इसके लिए सिद्धान्त निर्धारण कर 'आर्य समाज' की स्थापना की। उन्होंने देश के कोने-कोने में भ्रमण कर संस्कृत और संस्कृति के महत्त्व को बताया! यज्ञ के महत्त्व को जीवनोपयोगी बनाया। गीता में भी भगवान कृष्ण ने 'यज्ञ' का महत्त्व इस प्रकार बताया है :

अन्नाद्भवति भूतानि, पर्जन्याद्न्न सम्भव :

यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद् भवः

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षर समुद्भवम्

तस्मात् सर्वगत ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम् 3/14-15

उन्होंने इन श्लोकों में यज्ञ का महत्त्व बताते हुए कहा है-सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं, अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से होती है और यज्ञ विहित कर्मों से उत्पन्न होने वाला है। कर्म समुदाय को तू वेद से उत्पन्न और वेद को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न हुआ जान। इससे सिद्ध होता है कि सर्वव्यापी परम अक्षर परमात्मा सदा ही 'यज्ञ' में प्रतिष्ठित है।

इस प्रकार भारतीय संस्कृति में वेद व यज्ञ कर्म की महत्ता को युगों-युगों से स्वीकार किया है। इसी परम्परा को स्वामी दयानन्द जी ने आगे बढ़ाया और समाज को इसे अपनाने की प्रेरणा दी और आर्य धर्म स्थापित किया। स्वामी दयानन्द जी ने भारत भ्रमण करते समय सामाजिक कुरीतियों और आडम्बरों से मुक्ति करने के साथ-साथ समाज में फैले अन्धविश्वासों को दूर करने हेतु भारतीय जीवन शैली के अनुकूल संस्कृति को जानने और अपनाने पर बल दिया। उन्होंने छूआछूत, बाल विवाह, अज्ञानता, नारी की स्थिति को सुधारने जैसे सामाजिक उत्थान के कार्य किए। उन्होंने स्त्री शिक्षा की जोरदार वकालत की।

वेद के महत्त्व को बताते हुए उन्होंने वेद पढ़ने सुनने को परम धर्म बताया। उन्होंने बताया कि वेद सभी धर्मों का मूल है। वेदोऽखिलो धर्म मूलम् वेदों को विद्या का स्रोत मानकर ही उन्होंने आर्य समाज के दस नियमों में बार-बार विद्या को महत्त्व दिया है। आठवें नियम में उन्होंने अविद्या का नाश करने और विद्या की वृद्धि करने की बात कहीं है विद्या ही हमें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाती है। असत्य से सत्य की ओर तथा मृत्यु से अमरत्व की ओर ले जाती है। वेद के इस सन्देश को उन्होंने एक उद्घोष के रूप में प्रसारित किया।

तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्यो-र्माऽमृतम्गमय

असतो मा सद्गमम आज भी अनेक विद्यालयों और अनेक संस्थाओं में यह गूज सुनाई देती है।

भारतीय संस्कृति का गौरव संस्कृत भाषा से है। किसी ने कहा है

संस्कृताणाम् भाषा इति संस्कृत भाषा अर्थात् सुसंस्कृत-सुसंस्कारित लोगों की भाषा ही संस्कृत भाषा है। इसी से हमारी संस्कृति के विषय में कहा गया है। संस्कृते संस्कृति-इस सुसंस्कृत भाषा से ही हमारी संस्कृति की पहचान है। युवाओं के लिए ब्रह्मचर्य, योग साधना, यज्ञकर्म के माध्यम से चरित्र निर्माण के लिए प्रेरित किया। जीवन में सोलह संस्कारों के महत्त्व को बताते हुए उन्होंने संस्कारों को धारण करने पर बल दिया। संस्कारों से ही व्यक्ति सच्चरित्र बनता है। वेदों के अध्ययन के महत्व को बता कर उन्होंने सभी आर्य पुरुषों व आर्य समाज के अनुयायियों के लिए वेदाध्ययन को परमधर्म बताया। यहां तक कि उन्होंने वेद की निन्दा करने वाले को नास्तिक तक कह दिया। नास्तिको वेद निन्दक :

वेदाध्ययन से ज्ञान वृद्धि होती है। विद्या का विकास होता है। मगर श्रद्धापूर्वक वेदों का अध्ययन किया जाए। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने कहा है

''श्रद्धावान लभते ज्ञानम्

अन्यत्र कहा गया है

''धियो विद्या विराजति''

अर्थात् विद्या बुद्धियों को प्रकाशित करती है। वेदों के अध्ययन के प्रचार के साथ-साथ स्वामी जी ने भारतीय संस्कृति व संस्कृत भाषा को संरक्षण ही नहीं दिया अपितु संस्कृति के साथ-साथ संस्कृत भाषा के विकास में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। संस्कारों को भारतीय समाज में प्रचारित व प्रसारित करने में स्वामी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। अनेक संवादों भाषणों, संगोष्ठियों व शास्त्रार्थों द्वारा उन्होंने अनेक धर्मावलम्बियों व धर्माचार्यों के सन्देहों भ्रमों व मिथ्याचारों एवं अन्ध विश्वासों को दूर कर समाज को एक नई दिशा प्रदान की।

आर्य समाज की स्थापना कर उन्होंने भारतीय समाज में संस्कृत, संस्कृति, और संस्कारों का पुनरोद्धार किया। ''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' के लक्ष्य को सामने रखकर उन्होंने एक समाज सुधारक के रूप में अथक परिश्रम किया।

समाज को नई दिशा प्रदान करने, समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने तथा अन्धविश्वासों से मुक्त करने में स्वामी जी की अद्वितीय भूमिका रही है। आर्य समाज के माध्यम से श्रेष्ठ समाज की स्थापना का उनका ध्येय अभी पूर्ण होना शेष है। अगर हम उनके बताए मार्ग पर चलकर संस्कृत भाषा, भारतीय संस्कृति और संस्कारों को अपना कर सत्य, विद्या, यज्ञ और वेद को जीवन में धारण करें तो उनका 'आर्य समाज' के निर्माण का स्वप्न साकार हो सकता है। मेरे अनुसार :

भारत के हैं तीन आधार,

संस्कृत, संस्कृति और संस्कार।

स्वामी जी के समाजोद्धार के कार्यों को लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए सभी आर्य समाज मन्दिरों शिक्षण संस्थाओं व सस्थानों को संस्कृत भाषा भारतीय संस्कृति व संस्कारों के प्रचारार्थ अपने स्तर पर परियोजनाएं तैयार करनी चाहिए।

विद्यार्थियों को आर्य समाज द्वारा संस्कृत पढ़ाने की व्यवस्था की जानी चाहिए। संस्कृत भाषा में ही हमारी संस्कृति और संस्कार निहित है। इसी से भावी पीढ़ी का चरित्र निर्माण होगा। नैतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना हो

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

स्वाध्याय का जीवन में महत्व

स्वाध्याय की महिमा का वर्णन करते हुए शास्त्रों में कहा गया है कि स्वाध्याय मात्र श्रम नहीं, परमश्रम है। द्यावापृथिवी में जितने भी श्रम गिनाए जा सकते हैं, उनमें स्वाध्याय सभी की पराकाष्ठा है- चरम सीमा है। शतपथ ब्राह्मण में महर्षि याज्ञवल्क्य कहते हैं कि- **ये ह वै के च श्रमाः। इमे द्यावापृथिवी अन्तरेण-स्वाध्यायो हैव तेषां परमता काष्ठा**। इस द्युलोक और पृथिवीलोक के मध्य जो कोई भी श्रम है, स्वाध्याय उन सब की पराकाष्ठा है। व्यक्ति अपने जीवन निर्वाह के लिए अनेक प्रकार के श्रम अपनाता है। सभी श्रम करते हुए उसने यदि स्वाध्याय श्रम नहीं किया तो सब व्यर्थ है। इसे परम श्रम कहने का आशय भी यही है कि व्यक्ति स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जीवन में धारण कर ले। महर्षि मनु मनुस्मृति में स्वाध्याय के विषय में लिखते हैं कि-

स्वाध्यायेन व्रतैर्होमैस्त्रैविद्येनेज्यया सुतैः।
महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः।।

अर्थात् स्वाध्याय से, व्रत, होम के अनुष्ठान से , वेदों को पढ़ने से पौर्णमास आदि इष्टि करने से तथा पंचमहायज्ञों के अनुष्ठान से इस शरीर में ब्राह्मण भाव लाया जा सकता है।

स्वाध्याय के इसी परम धर्म को समझकर वर्तमान युग-प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने स्वाध्याय को परम धर्म कहा है। उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम में इसकी स्पष्ट घोषणा की है कि- वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। वेद का पढ़ना स्वाध्याय और पढ़ाना तथा सुनाना प्रवचन कहलाता है जिसे महर्षि याज्ञवल्क्य ने परम श्रम, महर्षि मनु ने परम तप कहा है, उसे ही महर्षि दयानन्द ने परम धर्म कहा है। अतः स्वाध्याय परम-श्रम, परम-तप, व परम-धर्म तीनों ही है। महर्षि दयानन्द के परमधर्म चतुष्टय में से तीन का पढ़ना का स्वाध्याय में, पढ़ाना और सुनाना का प्रवचन में समावेश तो हो गया, परन्तु सुनना परमधर्म फिर भी छूट गया।

छांदोग्य उपनिषद् के ऋषि ने धर्म-रूपी वृक्ष के स्कन्धों का वर्णन करते हुए स्वाध्याय को प्राथमिकता दी है- **त्रयो धर्मस्कन्धा यज्ञोऽध्ययनं दानमिति प्रथमस्तप एव द्वितीयो ब्रह्मचार्याचार्यकुलवासी तृतीयः।** धर्म के तीन स्कन्ध हैं उनमें से यज्ञ, अध्ययन और दान प्रथम है। स्कन्ध शब्द का अर्थ जहां कन्धा है, वहां वृक्ष के तने अथवा प्रकाण्ड को भी स्कन्ध कहते हैं। वहीं से सभी शाखा-प्रशाखाएं फूटती हैं। उसी से पत्र-पुष्प फल का उद्‌गम होता है। समस्त भार का वहन भी वही करता है। मनुष्य के कन्धे को भी स्कन्ध इसीलिए कहते हैं कि भार ढ़ोने का अवसर आए तो इन्हें ही आधार बनाया जाता है। तद्वत् स्वाध्याय वह प्रकाण्ड है, जिसमें से अर्थ कामरूप शाखा-प्रशाखाएं फूटती हैं,पुण्य रूप पुष्प और फल लगते हैं। जो व्यक्ति स्वाध्याय स्कन्ध को अपने जीवन का आधार बनाते हैं, उनके परिवार में धर्मानुकूल अर्थ और काम की शाखाएं फूटती हैं और उनमें यश तथा पुण्य के पुष्प और फल लगते हैं। इसलिए स्वाध्याय परम-स्कन्ध भी है।

महर्षि पतञ्जलि ने भी स्वाध्याय के महत्व को समझा था, इसीलिए उन्होंने योग के यम-नियमादि अष्टांगों में स्वाध्याय की गणना भी की। जहां पांच यमों को सार्वभौम महाव्रत कहा, वहां उन्होंने नियमों को उन महाव्रतों के पालन में सहयोगी बताया है-**शौच-सन्तोष-तपः-स्वाध्याय-ईश्वरप्रणिधानानि नियमाः**। स्वाध्याय और योग को परस्पर एक दूसरे का पूरक बताते हुए व्यासभाष्य में लिखा है-

स्वाध्यायात् योगमासीत योगात् स्वाध्यायमामनेत्।
स्वाध्याययोग-सम्पत्त्या परमात्मा प्रकाशते।।

व्यक्ति स्वाध्याय के द्वारा चित्तवृत्तियों का निरोध करे और चित्तवृत्ति निरोध द्वारा अधीत वस्तु का मनन करे। चितवृत्ति निरोध और स्वाध्याय के मनन से परमात्मा प्रकाशित होता है, वहां इच्छित दिव्य गुणों की सिद्धि स्वतः हो जाती है, जिसका वर्णन महर्षि पतञ्जलि ने इस प्रकार किया है-**स्वाध्यायादिष्टदेवता-सम्प्रयोगः**। अर्थात् सिद्ध हुए स्वाध्याय से स्वाध्यायशील व्यक्ति को अभीष्ट गुणों का साक्षात्कार होता है। इष्ट देवता का सम्प्रयोग होने से स्वाध्याय परम-योग है।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने तो न केवल स्वाध्याय को ब्रह्मयज्ञ कहा है अपितु उन्होंने स्वाध्याय यज्ञ के भिन्न-भिन्न पात्रों का वर्णन भी किया है। जिस प्रकार अग्निहोत्र में जुहू, चमस, स्रुवा, अवभृथ आदि पात्र होते हैं, तद्वत् स्वाध्याय यज्ञ के वाणी, मन, आंख आदि आवश्यक अंग भी अग्निहोत्र के पात्रों की भांति पात्र है। उन्होंने लिखा है- **स्वाध्यायो वै ब्रह्मयज्ञः तस्य वा एतस्य ब्रह्मयज्ञस्य वागेव जुहूर्मन उपभृत्, चक्षुर्ध्रुवा मेधा स्रुवः सत्यम् अवभृथः।।** अर्थात् निश्चय ही स्वाध्याय ब्रह्मयज्ञ है। वाणी इस ब्रह्मयज्ञ की जुहू है, मन उपभृत् है, चक्षु ध्रुवा है, मेधा स्रुव है और सत्य अवभृथ है। अर्थात् जिस प्रकार अग्निहोत्र आदि द्रव्ययज्ञों में पात्रों की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार स्वाध्यायरूपी यज्ञ में जुहू आदि की आवश्यकता है।

रसं ह्येवायं लब्ध्वा आनन्दी भवति- रस ही को प्राप्त करके साधक आनन्दी होता है। उपनिषद्‌कार ने जिस रस की ओर संकेत किया है, वह कोई सांसारिक रस नहीं है। वह परम-रस है जिसका पान करके वह आनन्दी हो जाता है। परमानन्द रस से किसी की तुलना की जा सकती है तो वह स्वाध्याय रस ही है, जिसे पान करके व्यक्ति आत्मविभोर हो जाता है, आनन्दी हो जाता है। वेद में मन्त्र आया है कि- **अकामो धीरो अमृतः स्वयम्भू रसेन तृप्तो न कुतश्नोनः।।**

वह परमात्मा रस से परिपूर्ण है, कहीं से अपूर्ण नहीं है। जिसके लिए स्वयं वेद में लिखा है कि उस परम रस को आदिसृष्टि में ऋषियों ने सम्भृत किया। उससे संभृत रस का जो अध्ययन करता है उसे नाना प्रकार की धाराएं मिलती हैं-

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसं।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम्।।

अर्थात् जो व्यक्ति अग्नि-वायु आदि ऋषियों द्वारा एकात्मना धारित वेद को अधिकृत रूप से ग्रहण करता है, अध्ययन करता है, उसे अनेकों लौकिक रस प्राप्त होते हैं।

इस प्रकार जो मनुष्य प्रतिदिन स्वाध्याय करने का नियम बना लेता है वह कभी भी अकर्मण्य, निराश, दुःखी नहीं हो सकता। वेदों, उपनिषदों तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय से मनुष्य आध्यात्मिक उन्नति की ओर अग्रसर होता है। इसलिए श्रावणी काल में मनुष्य को स्वाध्याय करना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजें भी इन दिनों में वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन करें। लोगों को आर्य समाज के साथ जोड़े तथा स्वाध्याय के लिए प्रेरित करें। स्वाध्यायशील मनुष्य पाखण्ड और अन्धविश्वासों से दूर रहता है। इसलिए महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के तीसरे नियम में लिखा है कि वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना -सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। इस परम धर्म का पालन करते हुए हम स्वयं भी स्वाध्याय का व्रत लें और दूसरों को भी प्रेरित करें तभी महर्षि दयानन्द के स्वप्न को पूरा किया जा सकता है।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

भारतीय संस्कृति बनाम वैदिक संस्कृति

ले.-डा. सुशील वर्मा फाजिल्का

यदि आज हम समग्र विश्व के इतिहास का अवलोकन करें तो विश्व में प्राप्य संस्कृतियों में से यदि कोई प्राचीनतम संस्कृति है तो वह है वैदिक संस्कृति। जब अन्य देशों ने अभी कुछ सीखा ही नहीं था तो हमारे वैदिक आर्य सभी कला-कौशल में प्रवीण थे। आज भी हम उसी संस्कृति के बहुमुखी, व्यापक एवं शाश्वत प्रभाव को संजोए हुए हैं। वेद स्वयं इस विषय सम्बन्धी उद्घोष करता है-

''सा प्रथमा संस्कृति विश्व-वारा'' (यजु 7/14)

विश्व के द्वारा स्वीकरणीय एवं प्रमुख वैदिक संस्कृति ही है। आज हम भारतीय संस्कृति एवं भारतीय सभ्यता की बात करते हैं तो प्रश्न यह उठता है कि क्या आज हम उसी संस्कृति एवं सभ्यता का अनुकरण कर रहे हैं जो हमें परम्परागत प्राप्त हुई ? क्या यह वही संस्कृति है जिसे हमने वैदिक संस्कृति के नाम से स्मरण किया। क्या यह वही है जिसके कारण हमें गौरवमयी होने का श्रेय मिला ? वही विश्वव्यापी संस्कृति जिसके बारे में डॉ. विण्टरनिट्ज कहते हैं-

उपरांत चर्चा में दो शब्द आ रहे हैं-'संस्कृति एवं सभ्यता'। क्या ये दोनों एक ही हैं ? वास्तव में सभ्यता से अभिप्राय है-मानवीय भौतिक विचारधारा। परन्तु संस्कृति मानव के आध्यात्मिक एवं मानसिक क्षेत्र के विकास की सूचक है। यह ठीक है कि भौतिक विकास से शारीरिक क्षुधा तो शान्त हो सकती है। आज वैज्ञानिक उन्नति हमें खूब प्रसन्न कर रही है, परन्तु आध्यात्मिक क्षेत्र में हम पिछड़ते जा रहे हैं।

यहाँ छान्दग्योपनिषद् की नारद मुनि कथा दृष्टव्य है। नारद अपने गुरु सनत्कुमार को कहते है कि मैंने चारों वेद, इतिहास, गणित, अर्थशास्त्र, तर्क शास्त्र, नीतिशास्त्र, भौतिकी, रसायन प्राणिशास्त्र ललित, नाट्य कला आदि सभी का अध्ययन किया है। यह सब कुछ पढ़ कर मैं ''मन्त्रवित्'' तो हुआ है परन्तु ''आत्मवित्'' नहीं।

प्रत्योन्तर में गुरु उसे अध्यात्म् का उपदेश देते हैं-''यो वै भूमा तत्सुखम्, न अल्पेसुखमस्ति''। इस उपदेश में गुरु उसे मानसिक स्तर से आत्मिक स्तर पर ले जाते है। उनका कहना है विस्तार में ही सुख है जिसे 'भूमा' नाम दिया गया है। यहाँ यह भी ज्ञातव्य है कि हमारे ऋषि बहुत अच्छे वैज्ञानिक भी थे, परन्तु उन्होंने अध्यात्मिकता को प्राथमिकता दी। कणाद ऋषि ने परमाणु पर अपना दर्शन जिसे ''वैशेषिक दर्शन'' कहा जाता है प्रस्तुत किया। एक परमाणु दूसरे परमाणु से किस विशेष धर्म में समान होते हुए भी पृथक है का विस्तृत वर्णन है। वहीं उन्होंने अपने दर्शन का उद्देश्य बताते हुए लिखा है-निःश्रेयस अथवा मोक्ष की प्राप्ति। जहाँ उन्होंने परमाणुवाद का प्रतिपादन किया है, वहीं ईश्वर, वेद, जीवात्मा मोक्ष, पुनर्जन्म प्रकृति आदि का भी उत्तम विवेचन किया है। इसी प्रकार ''सांख्य दर्शन'' में कपिल मुनि ने 25 तत्त्वों द्वारा जड़ तथा चेतन का विवेचन। गौतम का ''न्याय दर्शन'' प्रमाण और प्रमेय के विशेष ज्ञान से निःश्रेयस की प्राप्ति। चेतन तत्त्व (परमात्मा) को जीवात्मा अर्थात् मनुष्य कैसे प्राप्त कर सकता है-यह है पतंजलि का ''योग शास्त्र।'' ब्रह्म का स्वरूप कैसा है ? इसकी व्याख्या वेदान्त दर्शन में है जिसके प्रणेता महर्षि व्यास है, तथा यज्ञादि कर्मों का विवेचन ''मीमांसा दर्शन'' में है जिसके प्रवर्त्तक जैमिनी मुनि है। कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे ऋषियों ने अध्यात्म को ही उच्च स्थान दिया है।

हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का आधार वेद ही रहे परन्तु अफसोस इस बात का है कि महाभारत काल के समय से ही हमारी उस सभ्यता का ह्रास होना प्रारम्भ हो गया था और आज विकृति की सभी हदें पार करते हुए हमारी उस परम्परा का स्वरूप ही बदल गया। जिसे आज हम धर्म स्वीकार कर रहे हैं वह तो अवैदिक है। पाखण्ड, अन्ध-विश्वासों ने वेदों की शिक्षा के विपरीत मूर्ति पूजा को सर्वोच्च स्थान पर स्थापित कर दिया। अलग-अलग मत-मतान्तरों ने न जाने कितने गुरु पैदा कर दिए जो कि अपने आप को परमात्मा से भी उपर मानते हैं।

''गुरुर्ब्रह्म गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः''

अर्थात् परमात्मा तो है ही नहीं, वे ही ब्रह्म है, वे ही विष्णु, वे ही शिव (महेश) हैं। परिणाम आपके समक्ष हैं, कितने तथा कथित गुरु जेलों में चले गए और कितने ही इस मार्ग के पथिक हैं। जन सामान्य उन्हें ही परमात्मा स्वीकार करने लगे हैं-अज्ञानता के कारण, वेदों के प्रतिकूल विचारधारा एवं स्वार्थ सिद्धि के वश में अभिभूत होकर जन सामान्य को वेदों का ज्ञान तो बहुत दूर, उनके (वेदों के) नाम तक मालूम नहीं।

यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि हम पहले मुसलमानों के, तत्पश्चात् अंग्रेजों के पराधीन रहे और हमारी सभ्यता एवं संस्कृति विकृत रूप धारण करती रही। मुसलमान क्योंकि हमारी सभ्यता में इतने रस बस गए थे कि हमने उन्हें भी अपनी सभ्यता का अंग स्वीकार कर लिया क्योंकि अधिकतर मुसलमान हमारे ही हिन्दू भाई थे जिनके वंश हिन्दू ही थे और विवशता अथवा भय से इस्लाम को स्वीकार कर लिया था। पीरों फकीरों ने हमारा ही ओढ़ना ओढ़ कर हमारी सभ्यता को गंगा-जमुनी तहजीब का नाम दे दिया। समझ में नहीं आता कि यमुना कैसे इस्लाम का प्रतीक बन गई ? उन्हीं के पैगम्बरों, पीरों की कब्रों की पूजा करने लगे, मन्नतें माँगने लगे। हिन्दी के शब्द फारसी भाषा में जो उर्दू भाषा को जन्म दिया जिसे हिन्दुस्तानी भाषा का नाम दे दिया। अंग्रेज तो इससे भी आगे बढ़ गए। हम उनके गुलाम शारीरिक रूप से ही नहीं, मानसिक तौर पर भी हो गए। अपनी संस्कृति को हम तिलांजलि दिए जा रहे हैं और पाश्चात्य सभ्यता के पराधीन हो रहे हैं जहाँ से वापिस लौटना असम्भव सा लग रहा है। हमने अपनी सभ्यता छोड़ी, संस्कृति छोड़ी, भाषा को त्यागा, वेशभूषा को त्यागा, अपना भोजन त्यागा, अपनी औषध त्यागी। यह है प्रभाव सभ्यता के बदलने का।

एक नीतिकार के शब्दों में मुसलमानों और अंग्रेजों के शासन का परिणाम

वने प्रज्वलितो वह्निर्दहन मूलानि रक्षति।

समूलोन्मूलनं कुर्याद् वायुर्यो मृदुशीतलः।

अर्थात् जंगल में भड़की हुई दावानल हरे-भरे जंगलों को भस्म कर डालती है।

यह इतनी उग्र होती है कि मानवीय प्रयत्नों से आसानी से इसे नियन्त्रित नहीं किया जा सकता। यह तो दो अवस्थाओं में बुझती है-या तो जंगल में जलाने को तिनका तक भी न बचे अथवा प्रभु कृपा से लगातार वर्षा होती रहे।

यह भयानक आग ऊपर से तो वृक्षों के तनों को भस्म कर देती है परन्तु भूमि में उनकी जड़ें सुरक्षित रह जाती हैं और वर्षा ऋतु में फिर से पल्लवित हो जाती है। किन्तु वायु जो अनुभव करने में बड़ी कोमल और ठण्डी लगती है, आन्धी का रूप धारण कर वृक्षों को तो उखाड़ती है, उनकी जड़ें तक नहीं छोड़ती। अंग्रेजों के शासन ने ऐसे ही हमारी जड़ें उखाड़ दी। यही प्रभाव आज भी हमारी मानसिकता, संस्कृति एवं सभ्यता पर हावी है।

हमारी संस्कृति तो वैदिक संस्कृति है जो कि वेदों पर आधारित है। वे वेद जो अपौरुषेय है, किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं लिखे गए। वेद का ज्ञान तो सृष्टि के प्रारम्भ में ही प्राप्त होता है। जैसा कि विदित है कुरान की रचना तो मात्र 1400 वर्ष पूर्व ही हुई है। बाईबल की 2018, जन्दावस्था की लगभग 4000 वर्ष। इन सब से पहले क्या ज्ञान प्राप्य नहीं था। बाल्मीकि रामायण में श्री राम द्वारा हनुमान जी को वेदों का महान ज्ञाता बताया गया है।

नानृग्वेदविनीतस्य न यजुर्वेदधारिणः।

न सामवेद विदुषः शक्यमेव विभाषितुम्।। बा. रा. कि. 3/28

क्योंकि परमात्मा अपरिवर्त्तनशील है, उसके निर्मित नियम भी अपरिवर्त्तनशील है (अग्नि का नियम जलाना, जल का शीतलता प्रदान करना) ये नियम पहले भी थे, आज भी है, आगे भी रहेंगे। सृष्टि के प्रारम्भ से लेकर आजतक (1, 96, 08, 58, 119 वर्ष) हमारे वेद मन्त्रों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इन मन्त्रों का यथावत् रखने के लिए क्रमपाठ जटापाठ, शिखापाठ, धनपाठ आदि की रचना हमारे ऋषियों ने की जब कि बाईबल का

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सामाजिक विकास कैसे होगा ? अथर्ववेद

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

स्वामी दयानन्द सरस्वती का कथन है कि प्रत्येक को अपनी उन्नति में ही सन्तुष्ट न रहना चाहिए किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। वास्तव में व्यक्ति समाज की ही एक ईकाई है। यदि समाज में प्रत्येक व्यक्ति अपनी उन्नति करता है तो समाज स्वतः उन्नत हो जायेगा और यदि समाज उन्नत है तो व्यक्ति की भी उन्नति होगी। वास्तव में व्यक्ति और समाज एक दूसरे पर निर्भर है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को चाहिए कि अपनी उन्नति के साथ-साथ समाज की उन्नति के लिए भी कार्य करता रहे। इस विषय में अथर्ववेद काण्ड 5 सूक्त 26 में पर्याप्त चिन्तन हुआ है, हम वहीं से इस विषय में विचार करते हैं।

समाज अथवा किसी भी व्यक्ति के विकास के लिए ज्ञान प्राप्ति और उसका प्रचार प्रसार पहली आवश्यकता है। इसलिए वेद में कहा गया है-

यजूंषि यज्ञे समिधः प्रविद्वानिह वो युनक्तु।।1।।

अर्थ-(प्रविद्वान्) बड़ा विद्वान् (अग्निः) तेजस्वी पुरूष (इह) यहां (यज्ञे) संगति में (यजूंषि) पूजनीय कर्मों और (समिधः) विद्यादि प्रकाश क्रियाओं को (वः) तुम्हारे लिए (स्वाहा) उत्तम वाणी से (युनक्तु) उपयुक्त करे।

भावार्थ-बड़े विद्वानों का यह नैतिक दायित्व है कि वे समाज में घुल मिल कर विद्या और श्रेष्ठ कर्मों का ज्ञान लोगों को देवे।

युनक्तु देवः सविता प्रजानन्नस्मिन यज्ञे महिषः स्वाहा।।2।।

अर्थ-(महिषः) महान् (देवः) व्यवहार कुशल (प्रजानन्) बड़ा ज्ञानी (सविता) प्रेरक पुरूष (अस्मिन्) इस (यज्ञे) यज्ञ में (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (प्रजनीय कर्मों को) (युनक्तु) उपयुक्त करे।

भावार्थ-व्यवहार कुशल बड़े विद्वान् को स्थान-स्थान पर सभाएं बुला कर लोगों को विद्या प्राप्त करने तथा श्रेष्ठ कर्म करने को प्रेरित करना चाहिए।

विद्वान् को अपने विचार सरल भाषा और मृदुला वाणी में रखने चाहिए।

इन्द्र उक्थामदान्यस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान् युनक्तु सुयुजः स्वाहा।।3।।

अर्थ-(प्रविद्वान्) बड़ा विद्वान् (सुयुजः) सुयोग्य (इन्द्रः) बड़े ऐश्वर्य वाला पुरूष (उक्थामदानि) शास्त्रों और सुखों को (अस्मिन्) इस (यज्ञे) संगति में (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (युनक्तु) उपयुक्त करे।

भावार्थ-बड़ा विद्वान्, सुयोग्य और ऐश्वर्यमान पुरूष लोगों को सुन्दर वाणी से शास्त्रों के आधार पर बतावे कि उन्हें किन कार्यों को करने से सुख प्राप्त होगा।

प्रेषायज्ञे निविदः स्वाहा शिष्टाः पत्नीभिर्वहते ह युक्तः।।4।।

अर्थ-(प्रत्नीभिः) पालनशील शक्तियों से (युक्तः) युक्त (शिष्टाः) हे शिष्ट पुरूषों (प्रेषाः) भेजने योग्य (निविदः) निश्चित विद्याओं को (इह) यहां (यज्ञे) संगति में (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (वहत) लाओ।

भावार्थ-विद्वान् धीर लोग अन्न आदि दान करके सत्य विद्याओं का प्रचार करे। समर्थ पुरूषों को चाहिए कि वे परोपकार करने में अपने सामर्थ्य पर प्रयत्न करें।

छन्दांसि यज्ञे मरूतः स्वाहा मातेव पुत्रं पिपृतेह युक्ताः।।5।।

अर्थ-(युक्ताः) हे योग्य (मरूतः) शूर वीर पुरूषों। (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (इह) यहां (यज्ञे) परस्पर मिलाप में (छन्दांसि) आनन्द में वृद्धि करने वाले कर्मों को (इस प्रकार) (पिपृत) पालो, (माता इव) जैसे माता (पुत्रम्) पुत्र को (पालती है।)

भावार्थ-योग्य शूरवीर पुरूषों को चाहिए कि वे परस्पर मिलाप में आनन्द में वृद्धि करने वाले कार्यों को इस प्रकार पाले जैसे माता अपने पुत्र को पालती है।

एयमगन बर्हिषा प्रोक्षणी-भिर्यज्ञं तन्वानादितिः स्वाहा।।6।।

अर्थ-(इयम्) यह (अदिति) अखण्डनीति (स्वाहा) सुन्दर वाणी के साथ (बर्हिषा) उद्यम से और (प्रोक्षणीभि) अच्छी-अच्छी वृद्धियों से (यज्ञम्) आपस में मिलाप (तन्वाना) फैलाती हुई (आ अगन्) आई है।

भावार्थ-यह खण्ड वेद नीति सुन्दर वाणी के साथ परिश्रम से और अच्छी-अच्छी वृद्धि से लोगों का आपस में मिलाप करती हुई आई है।

चतुर पुरूष को चाहिए कि सामाजिक उन्नति में ही अपनी उन्नति करे।

विष्णुर्युनक्तु बहुधा तपांस्या-स्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।7।।

अर्थ-(सुयुजः) वाणी से (बहुधा) अनेक प्रकार (तपांसि) अपनी विभूतियों को (अस्मिन्) इस (यज्ञे) परस्पर मेल में (युनक्तु) लगावे।

भावार्थ-सुयोग्य कर्मठ पुरूषार्थी पुरूष सुन्दर वाणी से अनेक प्रकार अपनी विभूति को समाज के परस्पर मेल मिलाप में लगावे।

मेधावी पुरूष समाज के मेल मिलाप में निरन्तर लगा रहे।

भगो सुनक्त्वा शिषो न्व स्मा अस्मिन् यज्ञे प्रविद्वान्। युनक्तु सुयुजः स्वाहा।।9।।

अर्थ-(प्रविद्वान्) बड़ा विद्वान् (सुयुजः) सुयोग्य (भगः) ऐश्वर्यवान् पुरूष (आशिषः) अपनी इष्ट प्रार्थनाओं को (नु) शीघ्र (अस्मै) इस संसार के हित के लिए (अस्मिन्) इस (यज्ञे) परस्पर मेल में (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (युनक्तु) लगावे, (युनक्तु) लगावे।

भावार्थ-बड़ा विद्वान्, सुयोग्य, ऐश्वर्यवान् पुरूष अपने सामर्थ्य को इस संसार की भलाई के लिए सुन्दर वाणी से परस्पर में लगावे। यहां युनक्तु शब्द दो बार नीति में अधिक बल देने के लिए प्रयुक्त हुआ है।

सोमो युनक्तु बहुधा पयांस्य-म्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।10।।

अर्थ-(सुयुजः) बड़ा योग्य (सोमः) शान्त स्वभाव पुरूष (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (बहुधा) अनेक प्रकार (पयांसि) अन्नों को (अस्मिन्) इस (यज्ञे) परस्पर मेल मिलाप में (युनक्तु) लगावे।

भावार्थ-योग्य शांत स्वभाव पुरूष सुन्दरवाणी से अनेक प्रकार अन्नो को सुन्दर वाणी से मेल मिलाप हेतु दान करे, परोपकार में लगावे।

समाज के विकास का कार्य निरन्तर चलता रहना चाहिए।

इन्द्रो युनक्तु बहुधा वीर्या-ण्यस्मिन् यज्ञे सुयुजः स्वाहा।।11।।

अर्थ-(सुयुजः) सुयोग्य (इन्द्रः) प्रताप पुरूष (स्वाहा) सुन्दर वाणी से (बहुधा) अनेक प्रकार (वीर्याणि) अनेक वीर कर्मों को (अस्मिन्) इस (यज्ञे) परस्पर मेल मिलाप में (युनक्तु) लगावे।

भावार्थ-सुयोग्य प्रतापी पुरूष सुन्दर वाणी से अनेक प्रकार समाज को विकसित करने वाले कार्यों को बतावे तथा समाज में मेल मिलाप बनाए रखें।

अब अन्तिम एक मंत्र देकर विषय को समाप्त करते हैं।

अश्विना ब्रह्मणा यातम-र्वाञ्चौ वषट्कारेणयज्ञं वर्धयन्तौ।

बृहस्पते ब्रह्मणा याह्यर्वा-ङ्यज्ञो अयंस्वरिदं यजमानाय स्वाहा।।12।।

अर्थ-(अश्विना) हे कर्म कुशल स्त्री-पुरूषों (ब्रह्मणा) वेद ज्ञान से और (वषटकारेण) दान कर्म से (यज्ञम्) समाज को (वर्धयन्तौ) बढ़ाते हुए (अर्वाञ्ची) सम्मुख होते हुए (आयातम्) तुम दोनों आओ। (बृहस्पते) बड़े लोको के रक्षक परमात्मन् (ब्रह्मणा) वृद्धि साधन के साथ (अर्वाङ्) हमारे सम्मुख (आ याहि) तू आ। (अयम्) यह (यज्ञः) समाज (यज्ञमानाय) संगति शील पुरूष के लिए (इदम्) ऐश्वर्य देने वाला (स्वः) सुख होवे (स्वाहा) यह सुन्दर वाणी है।

भावार्थ-समाज के ऐश्वर्यवान् पुरूष उपलब्ध करावे। समाज का उद्बोधन सरल और शिष्ट भाषा में ही होवे। समाज में निरन्तर मेल मिलाप तथा परोपकार की भावना पर बल देते रहें।

कुछ गलत मान्यताओं का वैदिक स्पष्टीकरण

ले०-पं० खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोविन्द राय आर्य एण्ज सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता

हिन्दू धर्म में कुछ गलत मान्यताएँ ऐसी हृदय में बैठ गई है। जिनको निकालना बड़ा मुश्किल प्रतीत होता है। वैसे तो अनेकों गलत मान्यताएँ ऐसी हैं जिनका स्पष्टीकरण करना बड़ा मुश्किल है, फिर भी कुछ गलत मान्यताओं का यहाँ वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार स्पष्टीकरण किया है, वह इसी भाँति है।

१. जीव, ईश्वर का ही अंश है- हिन्दू धर्म में जीव, ईश्वर का ही अंश है बहुत अधिक मात्रा में हृदय में बैठी हुई है। कारण अद्वैतवाद जो आदि शंकराचार्य का चलाया हुआ मत है जिसको अधिकतर हिन्दू समाज मानता है, उसकी भी यही मान्यता है। परन्तु जीव, ईश्वर का अंश नहीं है इसका कारण यह है कि अंश और अंशी के गुण, कर्म, स्वभाव एक होने चाहिए। जैसे लकड़ी से नौका बनी, इन दोनों के गुण, कर्म, स्वभाव एक ही है। लकड़ी भी पानी में नहीं डूबती और नौका भी पानी में नहीं डूबती। लोहा और लोहे से बनी वस्तु के भी गुण, कर्म, स्वभाव एक ही है लेकिन ईश्वर और जीव के गुण, कर्म, स्वभाव एक समान तो है ही नहीं कहीं नहीं एकदम विपरीत भी है, जैसे ईश्वर सर्वज्ञ है, जीव अल्पज्ञ है, ईश्वर सर्वव्यापी है जीव एक जगह व्यापी है। ईश्वर सर्वगुण सम्पन्न है, जीव अल्प गुण सम्पन्न है, इसी प्रकार अनेक गुणों में अन्तर है इसलिए जीव को ईश्वर का अंश कहना उचित नहीं। जीव की अलग सत्ता है।

२. सर्वशक्तिमान् का अर्थ गलत लगाया गया-महर्षि देव दयानन्द के आने से पहले सर्वशक्तिमान् का अर्थ लगाया जाता था कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है यानि वह अवतार भी ले सकता है, अपने भक्तों के पैर भी दबा सकता है और अपने भक्त को चाहे उसका आचरण कैसा भी हो फिर भी उसको मालोमाल कर सकता है, पर यह परिभाषा गलत है महर्षि ने सर्वशक्तिमान की परिभाषा बतलाई कि जो अपने कठिन से कठिन कामों में भी किसी दूसरे का सहयोग न ले स्वयं ही करे यानि ईश्वर सृष्टि की उत्पत्ति करता हैं, उसका पालन करता है और फिर समय आने पर उसका विनाश यानि संहार भी करता है और जीवों के किये हुए अच्छे या बुरे कर्मों का फल अच्छे कर्मों का फल सुख के रूप में और बुरे कर्मो का फल दुःख के रूप में यथावत देता है और सृष्टि के आरम्भ में मनुष्यों का पथ-प्रदर्शन करने के लिए चार वेदों के ज्ञान का प्रकाश चार ऋषियों के हृदय में करता है। जिनके अनुसार चलने से मनुष्य अपने जीवन को सफल करते हुए मोक्ष की ओर अग्रसर होता है, इन सभी कामों में ईश्वर किसी दूसरों का सहारा नहीं लेता इसलिए ईश्वर सर्वशक्तिमान कहलाता है। ईश्वर के सर्वशक्तिमान की सही परिभाषा महर्षि दयानन्द ने दी साथ ही यह भी कहा कि ईश्वर अपने बनाए हुए नियमों में स्वयं भी बन्धा हुआ है। वह नियम के विरूद्ध कोई काम नहीं करता। ईश्वर सर्वशक्तिमान के साथ-साथ सर्वव्यापक भी है, सर्वज्ञ भी है, अजर, अमर भी है इसलिए अवतार लेने से ईश्वर में यह सब गुण नहीं रह सकते इसलिए ईश्वर अवतार भी नहीं लेता, न ही अपने भक्तों को अपनी इच्छा से पाप मुक्त भी नहीं कर सकता कारण वह न्यायकारी है।

३. हनुमान, सुग्रीव आदि बन्दर थे-हमारे पौराणिक भाईयों में हनुमान, सुग्रीव, बाली, अंगद आदि सभी बन्दर थे, ऐसी मान्यता उनके हृदय में ऐसी बैठी हुई है कि इस मान्यता को भय से निकाल नहीं पाते। परन्तु सही बात यह है कि रामायण के समय एक वानर जाति थी जो जगलों व पहाड़ों पर रहती थी। वे मनुष्यों की तरह मनुष्य थे, बड़े सभ्य और वेदों के विद्वान् थे। श्रीराम ने भी एक प्रसाद में हनुमान जी को वेदों का विद्वान् कहा भी है। एक बात समझने की है यदि हनुमान जी आदि बन्दर होते तो उनकी धर्म पत्नियाँ भी बन्दरी होती परन्तु इतिहास बाली की धर्मपत्नी तारा को बहुत सुन्दर और पतिव्रता स्त्री बतलाता है। इसलिए हनुमान जी बन्दर नहीं थे, अन्य मनुष्यों की तरह मनुष्य थे और कर्त्तव्य पारायण तथा वेदों के विद्वान् थे।

४. मोक्ष की अवधि निर्धारित की-महर्षि दयानन्द जी के आने के पहले मोक्ष की कोई अवधि नहीं थी। मोक्ष में जो चला गया वह हमेशा के लिए चला गया। वह दुबारा जन्म नहीं लेगा, ऐसा समझा जाता था। परन्तु महर्षि जी ने कहा कि मोक्ष किये हुए अच्छे कर्मों का फल है। अच्छे काम करने की अवधि है तो फल की अवधि भी निश्चित ही होगी चाहे वह कितनी भी लम्बी है। कार्य की अवधि होगी तो फल की अवधि भी निश्चित ही होगी। यह वैदिक सिद्धान्त है। इसलिए महर्षि दयानन्द ने वेदों के आधार पर मोक्ष की अवधि 21 मील २० खरब ४० अरब वर्ष निर्धारित की है। इतनी अवधि के बाद मोक्ष वाला जीव पुनः धरती पर जन्म लेता है।

५. अकाल मृत्यु नहीं होती- अधिकतर लोगों का विचार है कि जो व्यक्ति किसी दुर्घटना में मरता है उसकी अकाल मृत्यु होती है जैसे किसी की अस्सी वर्ष की उम्र है और वह साठ वर्ष की उम्र में ही दुर्घटनाग्रस्त हो गया, तो वह अपनी बाकी उम्र बीस वर्ष उसकी आत्मा भूत-प्रेत की योनि में भटकती रहेगी और बीस वर्ष बाद उसको अगली योनि उसके कर्मानुसार मिलेगी। परन्तु ऐसा नहीं है, ईश्वर सर्वज्ञ है, उससे ऐसी भूल नहीं हो सकती। वैदिक सिद्धान्त के अनुसार दुर्घटना में जितने व्यक्ति मरते है उनकी मृत्यु उसी दिन इसी प्रकार होने की लिखी होती है यानि ईश्वर के विधान में जितने व्यक्ति मरे है। उनकी मृत्यु इसी दिन इसी भांति थी। इससे भूत-प्रेत की योनि नहीं होती तथा अकाल मृत्यु भी नहीं होती यह भी सिद्ध होता है।

६. आर्य-बाहर से नहीं आये-हमारे बच्चों को इतिहास में पढ़ाया जाता है कि आर्य, मध्य एशिया या ईरान से आये। वह वीर कौम थी, वे उत्तर भारत से प्रवेश करके यहाँ के आदि निवासियों को दक्षिण में खदेड़कर अपना राज्य स्थापित कर लिया, पर ऐसी बात नहीं है। यह केवल अंग्रेजों की चाल थी ताकि यहाँ के हिन्दू भी विदेशी ही है, हमें ही विदेशी न कहें। अंग्रेजों ने काफी घूस देकर इतिहासकारों से ऐसा लिखवा दिया। पर सही बात यह है कि ईश्वर ने सृष्टि के आदि में तिब्बत के पठार पर एक कृत्रीम गर्भाशय बनाकर उससे युवा स्त्री-पुरुष व अन्य पशु-पक्षी पैदा किये। बहुत वर्षों तक मनुष्य उस पठार पर रहे। बाद में परिवार बढ़ जाने से लोग तितर-वितर हो कर कुछ लोगों का समूह भारतभूमि पर उतर गया और इसे आर्यवर्त्त कहकर यहीं रहने लगे और अपने आप को आर्य (श्रेष्ठ) कहने लगे। वहीं आर्यावर्त्त बाद में भरत के नाम से भारत हुआ फिर आर्यों को हिन्दू कहा जाने लगा। तब भारत वर्ष का नाम हिन्दू स्थान हो गया। इस प्रकार हिन्दू यहाँ के आदिवासी है। बाहर से नहीं आये। अब हमें बच्चों को इतिहास में यही पढ़ाना चाहिए।

गुरुपूर्णिमा पर्व हर्षोउल्लास के साथ मनाया गया

फिरोजपुर शहर की आर्य समाज मन्दिर गुरुकुल विभाग ने बड़े ही उल्लास के साथ गुरुपूर्णिमा पर्व को मनाया। सबसे पहले यज्ञ किया यज्ञ को डॉ. विनोद मेहता जी ने बड़े ही श्रद्धापूर्वक वैदिक रीति से करवाया तथा यज्ञमान पद को आर्य समाज मन्दिर की सेविका श्रीमति साक्षी (Sakshi) ने सुशोभित किया उन्होंने बड़े ही प्यार से आहूति डाली। डॉ. विनोद मेहता ने गुरुपूर्णिमा दिवस की महत्ता बताते हुये कहा कि यह पर्व हमें घर में यज्ञ करके मनाना चाहिये क्योंकि सबसे बड़ा गुरु माँ होती है जिस घर की माँ दुखी है। वह घर में कभी सुख शान्ति, समृद्धि नहीं होती उस से ईश्वर कभी भी कृपा नहीं करते आज देखने को मिला है कि वृद्ध आश्रम (Train) ट्रेनों तथा बसो की तरह भरे हुये है। हमें इससे बचना है। हमें घर में सुख शान्ति के लिये माता-पिता की सेवा करनी है। आप प्रतिदिन यज्ञ करो। आपके बच्चों पर इसका इतना बढ़िया प्रभाव पड़ेगा बच्चे पढ़ाई में आगे बढ़ेंगे। माता-पिता का आशीर्वाद ईश्वर का आशीर्वाद होता है। धार्मिक स्थल हमें यही शिक्षा देते है कि पहले घर में सुधार लाओ।

उपरान्त डॉ. विनोद मेहता ने विजय कारगिल दिवस जो कि एक दिन पहले ही हमारे देश में मनाया गया उस पर विचार रखते हुये कहा कि हम सभी सदस्यो की ओर से भारतीय सेना के जवानों को श्रद्धांजलि देते हुये तथा शहीद हुये जवानों को नमन करते है, शायद उसमें शहीद हुये सबसे कम आयु के 22 वर्षीय केप्टन विजयंत थापर जो कि हमारे पंजाब प्रांत लुधियाना के रहने वाला था। जिसके नाम से दिल्ली में शहीद केप्टन विजयंत मार्ग भी रखा गया। उन्हें मरणोपरान्त वीरचक्र भी दिया गया। उनकी चार पीढ़ी फौज में भारत की सेवा करती आ रही है डॉ. विनोद मेहता ने कहा कि आर्य समाजो को भी इसी दिन को विशेष रूप से यज्ञ करके मनाना चहिये। हम सभी भारतीय फौज को सलाम करते है।

इस गुरुपूर्णिमा पर्व में विशेष तौर पर उपसिथित हुये श्री शान्ति भूषण शर्मा, श्री हमेन्त स्याल विपन धवन छोटे-छोटे बच्चों में से, नदनी, संजना, तथा वंश। बाद में श्री हेमन्त स्याल जी ने गुरुपूर्णिमा दिवस पर विशेष भजन गाया।

अन्त में प्रसाद वितरत से पहले श्रीमति साक्षी देवी जो कि लगभग एक साल से आर्य समाज मन्दिर की सेविका रूप में काम कर रही है। उसे रसोई का सामान देकर श्री स्याल साहिब तथा डॉ. विनोद मेहता जी ने सम्मानित किया कहा कि एक साल में इन्होंने तथा इसके परिवार ने आर्य समाज मन्दिर की बहुत सेवा की तथा यह बधाई के पात्र है। भविष्य में भी इनसे यही उम्मीद रखते हैं। **-शान्ति भूषण शर्मा**

पृष्ठ 4 का शेष-भारतीय संस्कृति बनाम...

पुराना संस्करण Old Testament एवं नवीन New Testament प्रचारित हुए। इसी प्रकार कुरान पहले जबूर फिर तौरेत, फिर ईंजील और इसमें भी कुछ संशोधन कर कुरान की रचना हुई। इसी कारण हमारी संस्कृति "प्रथमा संस्कृति विश्ववारा" है।

वेद ईश्वरीय ज्ञान है, अपौरुषेय है, इसीलिए वेदों में कहीं इतिहास नहीं है। वहाँ किसी व्यक्ति विशेष, स्थान, देश अथवा राजा महाराजा का वर्णन नहीं है। जबकि इसके विपरीत बाईबल में पेल्स्टाइन के अनेक स्थानों, यहूदी राजाओं का वर्णन है। कुरान में भी अरब देश और मुहम्मद साहिब का वर्णन है।

इसके अतिरिक्त वेदों में सृष्टि क्रम के विरुद्ध कोई वर्णन नहीं है। वहीं बाईबल में कुमारी मरियम से (बिना पुरुष संयोग से) ईसा-मसीह का जन्म, ईसा द्वारा मुर्दों को जीवित कर देना, अन्धों की आँखे ठीक कर देना, आदि का वर्णन है। कुरान में भी इसी प्रकार पहाड़ बादलों की तरह उड़ते हैं। फरिश्ते आसमान में, तो खुदा सातवें आसमान पर, स्वर्ग (बहिश्त) में दूध और शहद की नदियों का बहना लिखा है। उन्हीं से प्रभावित हो शायद हमारे पुरुणों में भी वृतान्त दिए गए है- अगस्त्य ऋषि ने पूरा समुद्र पी लिया, हनुमान जी सूर्य को निगल गए, और न जाने क्या क्या कल्पना। क्या यही है हमारी संस्कृति, भारतीय संस्कृति, वैदिक संस्कृति, विश्ववारा संस्कृति ? कदापि नहीं। हम भ्रमित हो रहे है। विकृत सभ्यताओं के प्रभाव में। आज मूर्तिपूजक भी हिन्दू है, मूर्ति पूजा के खण्डन करने वाले भी हिन्दु, मांसाहारी भी हिन्दू, शाकाहारी भी हिन्दू, कबरों मजारों को पूजने वाले भी हिन्दू, पाश्चात्य परम्पराओं का पोषण करने वाले भी हिन्दू। तो क्या ये सभी वैदिक संस्कृति के रक्षक है ? भारतीय संस्कृति तो अब चूँ चूँ का मुरब्बा बन गया है। न परम्पराओं का पालन, ना वेद मार्ग का पालन, न हमारी भाषा, न भूषा न भेषज। क्या हम गर्व करे इस मौजूदा संस्कृति पर, "जिसे भारतीय संस्कृति का, धर्म निरपेक्षता का, आधुनिकता का नाम दिया गया है। कदापि नहीं, यह हमारी संस्कृति नहीं। आज नितान्त आवश्यकता है वेदमार्ग के अनुसरण की, वैदिक संस्कृति को पुनर्जीवित करने का। वेद का आदेश है तीन देवियाँ का आदर करना ताकि वे घर-घर को प्रकाशित करे इड़ा (प्रंशनीय संस्कृति) सरस्वती (वाणी, मातृभाषा) और मही (पूजा के योग्य मातृभूमि)

इड़ा सरस्वती मही तिस्त्रो देवीर्मयोभुवः।
बर्हिः सीदन्त्वस्त्रिधः। ऋग् 1/13/9.

गुरु पूर्णिमा धूमधाम से मनाई

आर्य समाज मन्दिर, जी० टी० रोड़, फिरोजपुर छावनी में आज "गुरु पूर्णिमा" का पावन पर्व पं. आशीष सुपुत्र श्री सुनील दत्त शास्त्री के सान्निध्य में हुआ। इस यज्ञ में मुख्य यज्ञमान श्रीमती स्वर्ण चावला धर्मपत्नी अर्जन सिंह चावला, ऐडवोकेट तथा श्रीमती स्वरूप सोनी धर्मपत्नी श्री राजेन्द्रपाल सोनी बनी। फिरोजपुर के प्रतिष्ठित गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया जिसमें मा० बृजभूषण भण्डारी, मा० मनोहर लाल छावड़ा, श्री विपन कुमार मित्तल, श्री संजीव अग्रवाल, श्री हरीश गुप्ता, श्री रम्मी कान्त आनन्द, श्री सुभाष गोयल के नाम उल्लेखनीय है। प्रधान श्री. विजय आनन्द ने आज के गुरु दक्षिणा पर्व पर विचार देते हुए बताया कि हमारे गुरुवर महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जो शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति के लिये नियम और विधियां बताईं हैं। उनके ऊपर चलते हुए तन-मन और धन से वैदिक ज्ञान को फैलाने में अपना पूर्ण सहयोग करें। ताकि हम उनके सपनों को साकार कर सकें। संसार को सरकार नहीं संस्कार ही सुधार सकते हैं, इसके लिये पहले खुद सुधरें फिर दूसरों को सुधारने का संकल्प लें। शान्तिपाठ के उपरान्त जलपान और प्रशाद का वितरण किया गया। प्रधान जी ने सभी आये हुए सज्जनों का देवियों और बच्चों का धन्यवाद किया।

-मनोज आर्य, महामन्त्री

शोक समाचार

महर्षि दयानन्द मठ वेद मन्दिर ढन्न मोहल्ला जालन्धर के ट्रस्ट के महामन्त्री श्री रविभूषण मित्तल जी का 28-07-2018 को प्रातः 10:00 बजे निधन हो गया। श्री रवि मित्तल जी पिछले कई दिनों से बीमार चल रहे थे। उनका अन्तिम संस्कार मॉडल टाऊन शमशानघाट पर उसी दिन सांय 6:00 बजे पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री रवि मित्तल जी धार्मिक विचारों के व्यक्ति थे। आर्य परिवार में जन्म लेने के कारण वे पक्के सिद्धान्तवादी तथा प्रतिदिन यज्ञ करते थे। श्री रवि मित्तल जी कई संस्थाओं के अधिकारी भी रहे। महर्षि दयानन्द मठ के प्रति वे पूरी तरह समर्पित थे तथा प्रत्येक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। उनका निधन आर्य समाज के लिए अपूरणीय क्षति है। परमपिता परमात्मा उनकी आत्मा को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे। महर्षि दयानन्द मठ की ओर से दिनांक 5 अगस्त रविवार को श्रद्धाजंलि समारोह का आयोजन किया गया है। 8:00 से 10:00 बजे तक यज्ञ होगा तथा 10:00 से 11:00 बजे तक श्रद्धाजंलि समारोह होगा। उनकी अन्तिम रस्म क्रिया 4 अगस्त शनिवार को देवी तालाब मन्दिर के श्रीराम हाल में दोपहर 2:00 से 3:00 बजे तक होगी।

-राजिन्द्र विज मन्त्री महर्षि दयानन्द मठ

शोक समाचार

आर्य समाज, बंगा रोड फगवाडा के मंत्री श्री हिमांशु पराशर एडवोकेट की पूज्या माता श्रीमती कुमद कुमारी जी का गत दिनों देहावसान हो गया। श्रीमती कुमद कुमारी जी धर्म तथा सेवा के कार्यों में सदैव तत्पर रहा करती थी। श्रीमती कुमद कुमारी जी का हंसमुख स्वभाव, मीठी वाणी एवं मिलनसार व्यक्तित्व हर किसी को अपना बना लेता था। ऐसे श्रेष्ठ विचारों की आत्मा का इस संसार से चले जाना परिवार के लिए अत्यधिक क्षति है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पूज्या माता श्रीमती कुमद कुमारी जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त हुए परमात्मा से प्रार्थना करती हैं कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान देकर शान्ति एवं सद्गति प्रदान करे तथा परिवार को दुःख सहन करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करे।

प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

शोक समाचार

आर्य समाज, आर्य समाज चौक पटियाला के प्रधान श्री राज कुमार सिंगला के पूज्य पिता श्री शाम लाल जी का गत दिनों देहावसान हो गया। श्री शाम लाल जी समाज सेवा के कार्यों में अग्रणी रहते थे। उनका मधुर व्यक्तित्व हर किसी को अपना बना लेता था। श्री शाम लाल जी अपने परिवार को हमेशा समाज सेवा का पाठ पढ़ाया। ऐसे आर्य विचारों की आत्मा का इस संसार से चले जाना परिवार के साथ साथ आर्य समाज के लिए अत्यधिक क्षति है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब पूज्य श्री शाम लाल जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त हुए परमात्मा से प्रार्थना करती हैं कि परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे तथा उनके जाने से परिवार की जो क्षति हुई है, उसे पूरा करने की शक्ति एवं धैर्य प्रदान करे। दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोक संतप्त परिवार के साथ हैं।

प्रेम भारद्वाज महामंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

पृष्ठ 2 का शेष-संस्कृत-संस्कृति-संस्कार

सकेगी। हम अपनी संस्कृति का अस्तित्व बनाए रखने में सफल हो सकेगे। भावी पीढ़ी संस्कार युक्त होगी। तभी स्वामी दयानन्द सरस्वती जी का स्वप्न साकार होगा और आर्य समाज के माध्यम से पूरा भारतीय समाज और विश्व समाज आर्य समाज बन सकेगा। यह सब संस्कृत, संस्कृति और संस्कार से ही सम्भव है। इनके उत्थान और विकास के लिए आर्य समाज को ही अपना उत्तरादित्व निभाना होगा।

महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में बोधोत्सव का आयोजन

आर्य जानों को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता होगी कि प्रतिवर्ष की भांति आगामी वर्ष में महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में शिवरात्रि के पावन पर्व पर भव्य ऋषि बोधोत्सव का आयोजन रविवार, सोमवार, मंगलवार 03,04,05 मार्च 2019 को किया जायेगा। आपसे निवेदन है कि आप यह तिथियाँ अभी से अंकित कर लेवें और इन तिथियों में अपनी आर्य समाज का कोई कार्यक्रम न रखकर उक्त समारोह में अधिक से अधिक आर्यों जनों के साथ टंकारा पधारने का कार्यक्रम बनायें। आपके आवास एवं भोजना की व्यवस्था टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगी।

डा. सूर्यकांत शोरी आर्य समाज बरनाला के प्रधान बने

आर्य समाज बरनाला के वरिष्ठ एवं प्रबुद्ध सदस्य श्री हरमेल सिंह जोशी की अध्यक्षता एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री भारत भूषण मैनन के कुशल नेतृत्व में दिनांक 22.07.2018 दिन रविवार को आर्य समाज बरनाला का चुनाव सम्पन्न हुआ। सर्व प्रथम कोषाध्यक्ष श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा जी ने गत वर्ष 2017-18 का आय-व्यय का विवरण प्रस्तुत किया जिसे सर्व सम्मति से पारित किया गया। आर्य समाज के मंत्री श्री तिलक राम ने गत वर्षों की गतिविधियों का वर्णन किया। मानयोग प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी जी ने समस्त उपस्थित सदस्यों का उनके योगदान व सहयोग के लिए धन्यवाद किया।

चुनाव प्रक्रिया प्रारम्भ करते हुए श्री हरमेल सिंह जोशी ने प्रधान पद के लिए उपस्थित सभासदों से नाम प्रस्तुत करने को कहा। श्री राम कुमार सोवती, श्री केवल जिन्दल एवं श्री वसन्त गोयल ने गत वर्षों में अर्जित लोकप्रियता एवं कार्य कुशलता को ध्यान में रखते हुए आर्य समाज के प्रधान पद के लिए डॉ. सूर्यकान्त शोरी का नाम प्रस्तुत किया। श्री प्रदीप गोयल, श्री राम चन्द्र आर्य एवं श्री देवेन्द्र कुमार चड्ढा ने समर्थन किया। समस्त सदस्यों ने करतल ध्वनि से इस प्रस्ताव का स्वागत करते हुए अनुमोदन किया। तत्पश्चात् श्री हरमेल सिंह जोशी ने प्रधान पद के लिए सदन से अन्य नाम प्रस्तुत करने को कहा। किन्तु सदन द्वारा कोई अन्य नाम प्रस्तुत न होने के कारण सर्वसम्मति से डॉ. सूर्यकान्त शोरी वर्ष 2018-19 के लिए प्रधान चुने गए। इसके साथ ही अपनी कार्यकारिणी गठित करने का अधिकार भी नव निर्वाचित प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी को दिया गया। प्रधान जी द्वारा नव-गठित कार्यकारिणी में श्री हरमेल सिंह जोशी एवं श्री भारत भूषण मैनन जी को उपप्रधान, मंत्री श्री तिलक राम, श्री सुखविन्दर लाल मारकण्डा-कोषाध्यक्ष, श्रीराम चन्द्र आर्य पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री रामकुमार सोवती वेद प्रचार मंत्री, एवं श्री केवल जिन्दल, श्रीचन्द वर्मा, श्री राजेश गांधी, श्री शिव कुमार बत्ता, श्री सूरज ज्ञान गर्ग, श्री विजय आर्य-अन्तरंग सदस्य।

आर्य समाज बरनाला का चुनाव 22.07.2018 को सम्पन्न हुआ जिसमें डा. सूर्यकांत शोरी जी को सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित किया गया। उनके साथ खड़े हैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री भारत भूषण जी मेनन, श्री बसन्त शोरी जी, श्री केवल कृष्ण जिन्दल, श्री प्रदीप गोयल, श्री राम कुमार सोवती एवं अन्य।

श्री हरमेल सिंह जोशी एवं श्री भारत भूषण मैनन जी ने अपनी लोकप्रियता के कारण नौवीं बार प्रधान चुने जाने पर डॉ. सूर्यकान्त शोरी को बधाई दी एवं सदन का धन्यवाद किया। अन्त में नव निर्वाचित प्रधान डॉ. सूर्यकान्त शोरी ने समस्त सदस्यों का धन्यवाद करते हुए वेद-प्रचार सम्बन्धी गतिविधियों को लोकप्रिय एवं गतिशील बनाए रखने का आश्वासन दिया। शान्ति पाठ के साथ सभा की कार्यवाही विसर्जित की गई।

तिलक राम मन्त्री आर्य समाज, बरनाला

सत्यार्थ प्रकाश से सम्बन्धित प्रश्नोत्तरी

श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल अधिष्ठाता साहित्य विभाग द्वारा प्रसिद्ध विद्वानों के सहयोग से तैयार प्रश्नोत्तरी। आशा है आर्य मर्यादा के पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

गतांक से आगे

प्र.1-सत्यार्थ प्रकाश किस की रचना है?
उत्तर-महर्षि दयानन्द सरस्वती

प्र.2-सत्यार्थ प्रकाश का लेखन कब पूर्ण हुआ?
उत्तर-सन् 1874 ई. में।

प्र.3-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने कितने ग्रन्थों का स्वाध्याय करके सत्यार्थ प्रकाश की रचना की?
उत्तर-लगभग 3000 ग्रन्थों का।

प्र.4-सत्यार्थ प्रकाश कब प्रकाशित हुआ?
उत्तर-सन् 1875 ई. में।

प्र.5-सत्यार्थ प्रकाश में कितने समुल्लास हैं?
उत्तर-14 समुल्लास हैं।

प्र.6-सत्यार्थ प्रकाश में भूमिका कितनी हैं?
उत्तर- एक।

प्र.7-सत्यार्थ प्रकाश में अनुभूमिका कितनी हैं?
उत्तर-चार।

प्र.8-सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-ईश्वर के नामों की व्याख्या।

प्र.9-सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-सन्तानों की शिक्षा तथा माता-पिता का कर्त्तव्य।

प्र.10-सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में किसका वर्णन हैं?
उत्तर-ब्रह्मचर्य, पढ़ने की विधि और पढ़ाने की विधि।

प्र.11-सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-विवाह और गृहस्थ आश्रम।

प्र.12-सत्यार्थ प्रकाश के पंचम समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-वानप्रस्थ और सन्यास आश्रम।

प्र.13-सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-राजधर्म।

प्र.14-सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-ईश्वर और वेद।

प्र.15-सत्यार्थ प्रकाश के अष्टम समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर- जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय।

प्र.16-सत्यार्थ प्रकाश के नवम् समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-विद्या, अविद्या, बन्धन और मोक्ष।

प्र.17-सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-आचार, अनाचार , भक्ष्य और अभक्ष्य।

प्र.18-सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-आर्यावर्त्त देश के मत-मतान्तरों का खण्ड़न।

प्र.19-सत्यार्थ प्रकाश के द्वादश समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-चारवाक्, बौद्ध, जैन आदि नास्तिक मत का खण्ड़न।

प्र.20-सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-ईसाई मत का खण्डन।

प्र.21-सत्यार्थ प्रकाश के चौहदवें समुल्लास में किसका वर्णन है?
उत्तर-मुस्लिम मत का।

प्र.22-महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण का पुनर्लेखन कब शुरू किया?
उत्तर-सन् 1882 ई. में।

प्र.23- सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण का पुनर्लेखन कहां शुरू हुआ?
उत्तर-उदयपुर के नवलखा महल में।

प्र.24-सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण का प्रकाशन कब हुआ?
उत्तर-सन् 1884 ई. में।

प्र.25-ईश्वर का सर्वोत्तम व निज नाम क्या है?
उत्तर-ओ३म्।

प्र.26-ओ३म् में कुल कितने अक्षर हैं?
उत्तर-तीन अक्षर-अ,उ और म्।

प्र.27-ईश्वर से बड़ा कोई है?
उत्तर-ईश्वर से बड़ा कोई नहीं है।

प्र.28-महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्यार्थ प्रकाश में ईश्वर के कितने नामों का वर्णन किया?
उत्तर-एक सौ नामों का।

प्र.29-ईश्वर के अलग-अलग इतने नाम क्यों हैं?
उत्तर-गुण कर्म और स्वभाव के अनुसार।

प्र.30-क्या ईश्वर के सौ से भी अधिक नाम हैं?
उत्तर-हाँ गुण, कर्म और स्वभाव के अनुसार असंख्य नाम हैं।

प्र.31-ईश्वर साकार है या निराकार?
उत्तर-ईश्वर निराकार है।

प्र.32-ईश्वर निर्गुण या सगुण है?
उत्तर-ईश्वर निर्गुण व सगुण दोनों हैं।

प्र.33-देवता कितने प्रकार के होते हैं?
उत्तर-दो प्रकार के-जड़ और चेतन।

प्र.34-जड़ देवता कौन से हैं?
उत्तर-अग्नि, वायु, आकाश, पृथ्वी, सूर्य, चन्द्रमा और नक्षत्र।

प्र.35-चेतन देवता कौन से हैं?
उत्तर-माता-पिता, गुरू और विद्वान्

प्र.36-ईश्वर कौन सा देवता है?
उत्तर-सभी देवताओं का देवता होने के कारण महादेव है।

प्र.37-देवता शब्द का क्या अर्थ है?
उत्तर-जो निरन्तर देते रहते हैं।

प्र.38-दु:ख कितने प्रकार के हैं?
उत्तर-तीन-आध्यात्मिक, आधिभौतिक और आधिदैविक।

प्र.39-क्या ईश्वर की मृत्यु होती हैं?
उत्तर-नहीं।

प्र.40-ईश्वर के तीन गुण बताओ?
उत्तर-ईश्वर न्यायकारी, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापक है।

प्र.41-क्या ईश्वर का जन्म होता है?
उत्तर- नहीं ईश्वर अजन्मा है।

प्र.42-बालक का प्रथम गुरू कौन है?
उत्तर-माता।

प्र.43-बालक का दूसरा गुरू कौन है?
उत्तर-पिता।

प्र.44-बालक के उत्तम शिक्षक कौन-कौन हैं?
उत्तर-माता-पिता और आचार्य।

प्र.45-अनजान जगह नदी, तालाब में स्नान करना चाहिए?
उत्तर-नहीं।

प्र.46-माँस खाना चाहिए?
उत्तर-नहीं।

प्र.47-चोरी करनी चाहिए?
उत्तर-नहीं।

प्र.48-गुरूमन्त्र किसे कहते हैं?
उत्तर-गायत्री मन्त्र को ही गुरू मन्त्र कहते हैं।

प्र.49-गायत्री मन्त्र का अर्थ किस समुल्लास में दिया है?
उत्तर-तीसरे समुल्लास में।

प्र.50- ब्रह्मचर्य आश्रम कितने वर्ष का है?
उत्तर-पच्चीस वर्ष का।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।